बायोटेक किसान हब परियोजना के तहत "चयनित एमएपी की कृषि-प्रौद्योगिकी" विषय पर पांच दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आईसीएआर-डीएमएपीआर, आणंद, गुजरात द्वारा आयोजित

भाकृअनुप-औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय (आईसीएआर-डीएमएपीआर) ने जल ब्राह्मी, अश्वगंधा, कौंचा, मधुनाशिनी इत्यादि जैसे औषधीय पौधों पर जागरूकता पैदा करने के लिए "चयनित एमएपी की कृषि-प्रौद्योगिकी" विषय पर 02 से 06 मई 2022 तक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य गुजरात में आजीविका और स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए चयनित औषधीय एवं सगंधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देना था। पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन और समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. गीता के. ए., प्रभारी निदेशक, आईसीएआर-डीएमएपीआर, आणंद ने की। डॉ. गीता एमएपी के दायरे, जीएपी, जीएसीपी के महत्व और औषधीय एवं सगंधीय पौधों के मूल्यवर्धन पर जोर दिया। उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एस. एस. कलामकर, निदेशक, कृषि-अर्थशास्त्र अनुसंधान केंद्र, आणंद थे। अपने

भाषण के दौरान उन्होंने कहा कि एमएपी क्षेत्र में व्यवसाय विकास के लिए बहुत बड़े अवसर हैं। एफपीओ औषधीय उत्पादों के विपणन, निर्यात और ब्रांडिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। डॉ. पी. एल. सारण, परियोजना के प्रधान अन्वेषक/पाठ्यक्रम निदेशक ने उद्घाटन समारोह के दौरान इस परियोजना के उद्देश्य के साथ-साथ कार्यक्रम का विवरण प्रस्तुत किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से कुल 40 से अधिक किसान लाभान्वित हुए। कुल मिलाकर कृषि प्रौद्योगिकी, जैविक खेती, ई-विपणन, बीज कार्यिकी, कटाई के बाद की तकनीक और चयनित औषधीय और सगंधीय पौधों के मूल्यवर्धन पर ग्यारह व्याख्यान दिए गए। इस कार्यक्रम के दौरान हर्बल गार्डन और दो प्रक्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया। समापन कार्यक्रम के दौरान डॉ. गीता और डॉ. सारण द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किया गया। कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. के. ए. कालरीया, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

(स्रोत :कृषि ज्ञान प्रबंधन इकाई भाकृअनुप-औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद,गुजरात ।)